मात्रुदेवो भव

माही सब की देवी है ।
माँ का प्यार ही दुनिया है ।
माँ से सब कुछ मिलता है ।
मात्रु देवो भव महा मंत्र है ।

पिता ही सब का ईश्वर है ।
पिता है नाम और पहचान ।
पिता से होगा काफी ज्ञान ।
पित्रु देवो भव होगा ध्यान ।

गुरु सभी का उद्धारक ।
गुरु जीवन का निर्देशक ।
गुरु सब कर्मों का कारक ।
गुरु देवो भव है तारक ।

अर्पण

श्रीमती भारती कमलाकर

अर्पण

कोमल कोमल कली खिली
बहार भर की खुशबू मिली ।
रंग है उस का प्रात; किरन
ढंग है उस का मलय परन
नाम है उसका देवी भारती
नारी है वह नव भारत की
मानवता का दीप जला
नया उजाला हैं फैला
आग है उस में दीक्षा की
लगन है उस में दीन रक्षा की
नाम है उसका देवी भारती
नारी है वह नव भारत की
धरा पे देवी उतर आयी
सहनशीलता उसका धाम ।
सेवा त्याग हैं उस के काम ।
कभी चाहती नहीं आराम ।
नाम है उसका देवी भारती
नारी है वह नव भारत की
हँसती रहना उसका प्रण
दया धर्म हैं उस के प्राण
शांति बाग की मालिनी है
कुछ करके दिखाने वाली है ।
नाम है उसका देवी भारती
नारी है वह नव भारत की
उस को सजाती मैं अपनी
गीत सुमों की माला से ।
आशीशें बरसाती हूँ
उस की श्रेयः कांक्षा से ।
नाम है उसका देवी भारती
नारी है वह नव भारत की

आशीः

कविइत्री श्रीमती शिवलंक गिरिजा जी से लिखी गयी कवितायें पढने का अवसर मिला है । उन्होंने इस कार्य में बडा श्रम किया है । उन्होंने प्रकृति वर्णन सूरज रूप से किया है । कली को देवी भारती मान कर मानवीकरण किया है । उसे अपने गीतों की सुममाला से सजाकर अपनी श्रेयः कांक्षा व्यक्त करती है । बादल की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उसे दूल्हा बना दिया ।

इंद्रघनुष की पोशाक पहनकर, सौदामिनी का हार संवर कर भारी सेना ले कर साम्राटों सा दर्प दिखाता, पूर्ण विश्व को पुलकित करता चमकता, गरजता बारात ले कर घनश्याम (कृष्णा) दुल्हा बनकर वसुंधरा (रुक्मणी)से ब्याह करने चंचल बादल आया । कैसा सुंदर मानवीकरण है ? इस में छायावाद की छटा है ।

श्रीमती गिरिजा जी कहती है कि प्यार भरे दिल में मंदिर है । प्यार सभी का ईश्वर है । प्रकृति के कण-कण में प्यार है । इस संदर्भ में ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं ।

छोटे जीवन राहों में
हँसते गाते आपस में
साथी बन कर जाना है
मंजिल तक पहुँचना है ।

यदि दुःख देनेवाली समस्याएँ आ पडती हैं उन्हें क्षत्रिय के समान हँसते हँसते सामना करने की सलाह देती है । कहती है कि चेहरे पर सदा हँसी रहना ही सबसे महँगा गहना है । इनसान का काम केवल लेना ही नहीं देना भी है । यह भी बताया गया है कि आँखों से प्यार बहा कर होठों पर मुसकान रख कर तुम भी सब को सब दे सकते हो । तू है इनसान ।

ज्यादा कविताएँ लौकिक-अलौकिक भावों से हैं । उन्हें लौकिक माने तो उनका लक्ष्य अलौकिक है ही । भगवान (परमात्मा) को प्रेमी मान कर उनके पास पहुँचने प्रेयसी (आत्मा) का प्रयत्न ही यह है । याद शीर्षक कविता की ये पंक्तियाँ देखिये ।

फिरसे तुम्हारी याद आ गयी है
दिल में जलन सी पैदा हुई है ।
साजन मुझे तुम अपना बना ले
साथी मुझे अपने दिल में छिपा ले ।
तुम्हारे निगाहों में मैं खो गयी हूँ
तुम्हारे ही राहों में मैं रह गयी हूँ
सदियों से मैं तेरे दर्शन की प्यासी
जन्मों से मैं तेरे लिए उदासी
तुम दूर हो तो क्या है बहार
सच बोल दूँ तो दिल बेकरार ।

इस प्रकार की कविताएँ पढते समय हिंदी में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त ''अधुनिक मीरा'', कहलानेवाली श्रेष्ट कविइत्री स्वर्गीय महादेवी वर्मा की याद आती है ।

मात्रु देवो भव कविता में माता, पिता और गुरु के प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पित कर हिंदू सामाजिक संस्कृति की महानता पर प्रकाश डाला गया है । हमारे समाज में ''नारी'' पर जितने अत्याचार हुए और हो रहे है उनका बरब्रान किया गया है । कई समाज सुधारकों ने नारी के उद्धार के लिए भर-सक किया अंत में यह कह कर गये -

नारी अपना उद्धार सुद ही करना है
नारी का मतलब सोना नहीं
चाँदी नहीं रंग बिरंगी साडी नहीं
सोचा समझो अपना हालत
भारत की नारी बदलो कहानी तेरी ।

यह कविता पढते समय हिंदी के राष्ट्र-कवि स्वर्गीय मैथिली शरण गुप्ता जी की ''यशोधरा'' की ये पंक्तियाँ स्मरण आती हैं ।

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी''

आशा है कि श्रीमती गिरिजा जी की लेखिनी से हिंदी कविताएँ निकलेंगी ।

दाट्ल वेंकट राम राजु
अध्यक्ष हिंदी विभाग (रिटैरड)
शातवाहना कालेज, विजयवाडा

भारत की नारी

भारत की नारी कैसे कहूँ कहानी तेरी,
जग की तुम हो फुलवारी ।
फिर भी कितनी बेचारी,
तुम हो गहरा प्रेम का सागर
तुम हो निश्चल त्याग का शिखर
हर घर की तुम देवी हो
हर आंगन की तुलसी हो
प्रेम वह्नि में जलनेवाली
बत्ती बनकर पिघलनेवाली
लक्ष्मी हो तुम दौलत की
शक्ति हो तुम जीवन की
देवी हो तुम विद्या की
रानी हो तुम झांसी की
इंदिरा हो तुम भारत की
किरन बेडी हो साहस की
रूपा बजाज हो आज की
एक राजा ने तुम्हें जंगल भेजा
एक राजा ने तुम्हें कानून में छोडा ।
एक पति ने तुम्हें बाजार में बेचा
एक पति ने तुम्हें जुएँ में पेका
एक वीर ने तुम्हें शिखंडी बनाया

एक धर्म ने तुम्हें पाँचाली बनाया ।
एक समाज ने सर के बाल में मुँडवाये
एक पुत्र ने तेरा सर काट डाला ।
एक राजा ने तुम्हें चुरा के ले गया ।
राम ने तुम्हें शंका से जलाया ।
सती कह कर समाज ने जलाया
दहेज कह कर ससुराल ने जलाया
लड़की कह कर माता पिता
औरत कह कर दुनियाँ
आज तक तेरा दिल जलाते ही रहे ।
पिता ने तुम्हें कभी बेचा
कभी दान में दिया
लेनेवाला नहीं मिला तो
दहेज दे कर छुडाने लगा ।
विज्ञान ने भी तुम पर
एहसान ऐसा किया
कि मात्रु अर्थ में ही तुझे मार डाला ।
तेरे उद्धार के लिए कई आये
राजा राममोहन राय, गाँधीजी
एक कंदुकूरि, गुरजाडा, और
कई कर के कह के गये कि
नारी अपना उद्धार खुद ही करना है ।
नारी की मतलब सोना नहीं

चाँदी नहीं, रंग बिरंगे साडी नहीं
सोचो, समुझो, जागृति पाओ ।
खुद ही सुधारो अपना हालत
भारत की नारी, बदलो कहानी तेरी ।
देश को आजादी करने में
संघ श्रेय के साधन में
कलम से समाज सुधारने
धरती से अंबर तक
गान सुधा बहाने में
नाच में परियों जैसे
जगा को सम्मोहित करने में
रंग मंच पर तरह तरह के
रुप धारण कर दिखाने में
दुनियां भर में भारत की
ताकत प्रकटित करने में
समाज सेवा में खुद को
सर्व समर्पम करने में
पहा शकियाँ बन के आज भी
असंख्य नारी विराज़ मान हैं
सूरज चंदा जैसे युग युग
भारत नारी फूल फलेगी ।

दिल

एक अनोखी चीज है ।
भले बुरे का बीज है ।
वह अनजाना राज है ।
अन चाहा एक बोझ है ।
हरेक की वह ताज है ।
फूल की तरह खिलती है ।
काँटा बन कर चुभती है ।
रात बन कर रोती है ।
सबेरा बन कर हँसती है ।
गरजता हुआ सागर है ।
महकता हुआ बहार है ।
कभी किसी की न सुनती है ।
ज्वाला मुखी है चंद्रमुखी भी
घृणा प्यार भी इस में हैं ।
आशा निराशा इसकी हैं ।
इस का नाम क्या हो सकता है,
भला और क्या, दिल ही है ।

अनमोल खजाना

दुनियाँ के तो दो ही रंग है । काला और उजाला ।
उजाले को अपनाना है छोड ही देनाौर
कभी कभी दुनियाँ लगती अपनी तो कभी परायी
सुंदर मोहक फूल की चाह में हाथ लगेंगे काँटे
काँटे छोडो चुभन भी भूलो फूल ही अपना मानो
जरा उजाला ज्यादा अंधेरा जग का यही तरीका है ।
रात गुजारो आँख मूंद कर खोल के देखो दिन को ही
भरा अंधेरा दिल में है । तो जग सारा अंधेरा
सूरज, चंदा तारों का भी प्रकाश है बेकार
दुनियाँ के सब खोने पर भी होगा नहीं नुकसान
प्यार से जब दिल होगा खाली होगे तुम बेजान
रोते रोते हँसना भूले भूले गाना जीना
सीखो सीखो आस पास की खूबी को अपनाना
पास रखो खुशियों का खजाना सबको दे देने को
कभी न खाली होने देना उस अनमोल खजाने को

किताब

किताब है ला जवाब है
दुनियाँ की खुश नसीब है
बीते दिन की कथा सुनाती
आगे युग के चित्र दिखाती
परियों को भी पास बिठाती
तारों को भी हाथ में देती
सपनों के रंग सजा सजा कर
सच करने में साथी बनती
सभी नजारे सम्मुख लाती
जग में हम को प्रमुख बनाती
तीन युगों को तीन जगों को
हाथ में रख रख कर आशा बढाती
कायर दिल को धीरज देती
निकम्मे को शूर बनाती
अकेले में अपना बन कर
हर पल नव जीवन देती
कष्ट नहीं है काम नहीं है
बिठा बिठा कर आराम देती
आँखों से दिल में उतरती है
दिल में ज्ञान उगाती है ।
किताब सब से महान है ।
किताब से ही जहान है ।

मन - मंदिर

प्यार भरा दिल मंदिर है ।
प्यार सभी का ईश्वर है ।
खुशियों के ही फूलों से
हमें उस की पूजा करती है ।

जमीन, आसमान पानी में
हवा में देखो प्यार भरा ।
सकल जगत को प्यार ही
प्राण शक्ति दे सकता है ।

इंद्र धनुष के सात रंग में
रंग बिरंगी किरणों में
नाचती बहती झरनों में
साज मैत्री का बजता है ।

तरह-तरह के लोगों से
धरती भरा बगीचा है ।
फूल जैसे प्राणी के
खिलता झडता मेला हैं ।

छोटी जीवन राहों में
हसते गाते आपस में
साथी बन कर जाना है
मंजिल तक पहुँचना है ।

बादल दुल्हा

आया बादल आया पैदल
कभी ललवाता कभी रूठ जाता
कभी तो ठंडी आहें भरता
हवा से डरता आग बरसता
इंद्र धनुष की पोशाक पहन कर
सौदामनी का हार सवर कर
साथ में भारी सेना ले कर
सम्राटों सा दर्प दिखाता
आया बादल आया पैदल

दूर गगन पर मंद मंद गति
तडपता पिघलता, दया बरसता
पूर्ण विश्व को पुलकित करता
चंदा सूरज को धमकाता
पीछे पडता मजाक उडाता
चमकता, गरजता बारात ले कर
घन श्याम का रंग लगा कर
करने ब्याह वसुंधरा से
आया बादल आया चंचल ।

आजादी

आजादी का उजाला ले कर
आज का सूरज आया है ।
आजादी की खुशबू लेकर
आज की कलियाँ खिलती है ।
आजादी के बगीचे में
आज के सुमन महके हैं
आजादी की बोली से
आज की चिडियाँ चहकी हैं
आजादी कसे उमंगों से
आज समुंदर उछला है ।
आजादी की मस्ती में
आज मयूरी नाच रही
आजादी के रंगों में
आज की दुनिया चमकती हैं
आजादी के गीतों को
आज की हवा गाती है ।
आजादी के त्योहारें
आज भारत मनाती हैं
आजादी के मेलों को
भारत सदा मनायेगी
आओ हम इस मौसम में
जोश में झूमते गायेंगे ।

ब्रह्म समाज

यही है ब्रह्म समाज
यही है मानवता विकास
राजा राममोहन राय का
बनाया गया भव्य भवन

भाषाओं के गहनों से
एकता के कपडों से
सज-धज कर भारतमाता
बसा हुआ घर ब्रह्म समाज

विश्व-प्रेम की जोत जला कर
मानवता का मंत्र पढा कर
हम सब मिल कर चलते हैं
दुनियाँ को अपना बनाते हैं ।

महंगा गहना

हँसते हँसते जीना है ।
हँसते हँसते हसाना भी है
रोते रोते आये फिर भी
हँसते ही गुजरना है ।

हँसता चेहरा सबेरा है ।
हँसता दिल सितारा है
सूरज चंदा हँसते हँसते
जग को जगमगाते हैं ।
नन्हें बच्चे हँसते ही
घर फुलवारी बनाते हैं ।
आजीवन भर हँसते ही
फूल खुशियाँ बिखराते हैं ।

हँसते हँसाते रहना ही
सचमुच जीना होता है ।
चेहरे पर सदा हँसी रहना ही
सब से महँगा गहना है ।

हँसते हँसते जीना है ।
हँसते हँसाते रहना है ।

धरा का सूरज

देखो सूरज आता है
रंग बिरंगे किरणों से
जग को जागृत गीत सुनाता
ज्योति बनकर आता है ।

सागह, जंगल, परबत का
फूल कांटे का भेद नहीं
सब को प्यार से छूता है
जग को गले लगाता है ।

ऊँच नीच का भेद नहीं
अपना पराया ध्यान नहीं
आलस नहीं आराम नहीं
सदा जोशीला रहता है ।

हरहालत में हर जगह में ।
रुकावट नहीं थकावट नहीं
भाग दौड की बात नहीं
चाह मोह का झंझट नहीं ।

शरमाती छुपती दुनियाँ को
प्यार बांटता प्रकाश देता
जीवन दाता सूरज ही
लोक-बंधु कहलाता है ।

प्यार बांटते प्रकाश देते
धरा के सूरज हम बनते
रूके बिना झुके बिना
आगे ही आगे ही चलते हैं ।

फ़र्ज

कम से कम तू है इनसान
कुछ न कुछ कर दिखला
लेना ही नहीं देना भी सीख

बिना चाह से जग तुम्हें
बिना माँगे सब देता है
बिना बदन की हवा भी
प्राणों को प्राण देती है
बिना पैर के पानी बी
सेवा में बह जाता है
आखिर कांटा भी देता पहरा
सुंदरता की अपना फर्ज निभाता है ।

बहा कर आँखों से प्यार
रखा कर होठों पर मुसकान
तुम भी सब को सब दे सकते हो
कम से कम तू हे इनसान
कुछ न कुछ कर दिखला ।

याद

फिर से तुम्हारी याद आ गयी है
दिल में जलन सी पैदा हुई है
साजन मुझे तुम अपना बना ले
साथी मुझे अपने दिल में छुपा ले
तुम्हारी निगाहों में मैं खो गयी हूँ
तुम्हारा ही राहों में मैं रह गयी हूँ
सदियों से मैं तेरे दर्शन की प्यासी
जन्मों से मैं तेरे लिए उदासी
तुम दूर हो तो क्या है बहार
सच बोल दूँ तो दिल बेकरार

युवा

आशाओं के दीप जलाकर
खुशियों के नव फूल खिलाकर
दुल्हन जैसा रूप सजाकर
नया साल आया युवा नाम धरकर

तिरंगा

जय जय जय हो तिरंगा प्यारा
जय हो भारत देश हमारा
आजादी का त्योहार आज है ।
आशाओं का बहार आज है ।

तिलक, गोखले, पटेल, प्रकाशम
चंद्रशेखर और जवाहर
अल्लूरि के शौर्य सोच कर
तात्या तोपे तत्व जानकर झांसी रानी शक्ति सोच कर
अंबर तक तिरंगा उडायें
अमर वीर की गाथा गायें
देश प्रेम की हरियाली को
त्याग वीरता की लालिमा को
शांति, प्रेम की सफेदी को
अशोक चक्र में प्रगति चक्र को
झंडे में हम पायेंगे
आओ सुर में सुर मिला कर
देश प्रेम ही गायेंगे
आजादी भारत सजायेंगे ।

दोस्ती

दोस्ती सबसे बढिया धन है ।
दोस्ती जीने का साधन है
जंगल जैसा जीवन पथ में
दोस्ती फूल खिलाती है ।

दोस्ती जीवन सागर में
मोती जैसा मिलता है ।

दोस्ती से बचपन जोशीला
दोस्ती से जवनी फुर्तीली
दोस्ती से जीवन रंगीला ।
दोस्ती से हर पल उजियारा
दोस्ती मन का आशा गीत
दोस्ती गीतों का संगीत

रंग रूप का ढंग नहीं
पास दूर की बात नहीं
धन दौलत का खर्च नहीं
काम काज का बोझ नहीं
दिल का नरम जो होता है
दोस्ती जरूर पा सकता है।
दोस्त ही जग में अपना है ।
दोस्ती सुंदर सपना है ।

भारत के बच्चे

भारत के हम बच्चे हैं
दिल से हमेशा सच्चे हैं
कभी कहीं न झुकते हैं ।
जो चाहे कर सकते हैं ।

धीरज में हम परबत हैं ।
सूरज जैसा उजाले हैं ।
बादल सा दिलवाले हैं ।
सत्य दया के रखवाले हैं ।

जीत हमेशा पाते हैं ।
गीत खुशी के गाते हैं ।
हसते गाते जीते हैं ।
हाथ मिलाकर चलते हैं ।

किसान हैं हम खेतों में ।
जवान हैं हम सरहद में ।
फूल हैं हम गुलशन में ।
इनसान हैं हम जीवन में ।

सावन

आया है सावन झूमा मेरा मन
आजाना साजन आ जाना

अंबर पे छायी काली घटायें
तुम्हारी यादे मुझ में समायी
नैनों के आगे तुम हो तो जीवन
बना रहेगा सुंदर सुमवन
भीगी लताएँ पेडों से लिपटी
मस्ती में झूमी अपने को भूली ।

एसे में दुनियाँ दुल्हन बनी है
तुम्हारे लिए मन उड जा रही है ।
चंचल हवाएँ कानों में बोली
लग जा गले तू अपने पिया से
कलियाँ भी बोली शरमाके मुझ से
साजन के गले की माला तू बन जा
आया है सावन झूमा मेरा मन
आ जाना साजन आ जाना ।

हमारा भारत

देश हमारा भारत है ।
प्रेम हमारी नीयत है ।
सारे जग में भारत का
ज्ञान प्रकाश फैला है ।

गौतम बुद्ध की जन्म भूमि है ।
गांधी की भी मात्रु भूमि है ।
शांति कबूतर इसी देश से
सारी दुनिया गूम आया है ।

यहाँ की हवा प्यार सुनाती है
यहाँ की नदियाँ सुधा बहाती है
बादल यहाँ रहम बरसाते हैं ।
फूल भी यहाँ प्यार की खुशबू देते हैं ।

नया साल

आगे बढने का संदेश सुनाता
जग को शुभाभिनंदन देता
नया साल आया सुहाबना
लिया नाम अपना छियानव